IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 27, Issue 5, Series 6 (May. 2022) 01-12
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

बाबा साहेब का सम्यक जीवन दर्शन

अशोक कुमार (शोध छात्र)
मेवाड विश्वविद्यालय, चित्तौडगढ (राजस्थान)

डॉ. रणवीर सिंह
सहायक आचार्य इतिहास विभाग
हर्ष विद्या मन्दिर पी.जी कॉलेज
रायसी हरिद्वार उत्तराखण्ड

कुछ लोग थे जो वक़्त के सांचे में ढल गए, कुछ लोग थे जो वक़्त के सांचे ही बदल गए...। प्रतीकात्मक ही सही लेकिन प्रत्येक राष्ट्र में किसी न किसी रूप में समाज, धर्म व दर्शन का अपना एक खाका अवश्य मौजूद होता हैं। अधिकांश व्यक्ति उस उपलब्ध सामाजिक–धार्मिक सांचे में ही समा जाते हैं लेकिन जब हम डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर के जीवन दर्शन को समझने का प्रयास करते हैं तो ज्ञात होता हैं कि वे भारत के ऐसे युगदृष्टा व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षणों में वक़्त के सांचे को ही पथप्रदर्शित किया अर्थात सरल शब्दों में स्पष्ट किया जाए तो बाबा साहेब के धर्म संबंधी विचार, समाज–सुधार के प्रयास तथा संवैधानिक मूल्यों के प्रति उनकी दृढ़ता इत्यादि में एक दर्शन अंतर्निहित हैं और क्योंकि ये दर्शन समाज पर समुचित, संतुलित व मंगलकारी प्रभावोत्पादन करता है इसलिए यहाँ सम्यक जीवन दर्शन को प्रतिबिंबित व विश्लेषित करते हुए उक्त विषयवस्तु की सार्थकता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया हैं। जब हम उनके सामाजिक दर्शन की बात करते हैं तो उसमें समाज के विभिन्न फलकों जैसे– वर्ण, जाति, महिला, श्रमिक आदि सभी के प्रति उनके वैचारिक व बौद्धिक चिंतन परिलक्षित होते हैं। इसी प्रकार धर्म संबंधी उनके विचार नैतिकता व मानवता की आधारशिला पर अभिलेखित हैं। बाबा साहेब का राष्ट्रवाद संकीर्ण हितों पर आधारित न होकर व्यापक तत्व चिंतन पर आधारित था जिसमें सामाजिक समता जैसे संवैधानिक मूल्यों के साथ–साथ आर्थिक राष्ट्रवाद का सन्दर्भ भी उद्घाटित होता हैं। इस तरह उनके सम्पूर्ण जीवन दर्शन को दृष्टिगत रखते हुए समाज, धर्म, व राष्ट्र संबंधी उनके विचार को सार संदर्भित किये जाने की आवश्यकता हैं।

अम्बेडकर का सामाजिक दर्शन :

डॉ० भीमराव अम्बेडकर के महान व्यक्तित्व के जीवन और उद्देश्यों की व्याख्या करना अत्यंत ही कठिन कार्य है। ऐसे महान दार्शनिक के जीवन का सम्पूर्ण लेखा–जोखा तथा उनके जीवन दर्शन व श्रेष्ठ मंतव्य की विवेचना इतने कम पन्नों में समायोजित करना सम्भव नहीं है। भारतीय जनजागृति का निर्णय कुछ भी हो, चाहे उन्हें लोग भारतीय संविधान का रचयिता समझें या आधुनिक युग का निर्माता, परन्तु अछूतों को विकास की मुख्य धारा में जोड़ने में उनका प्रमुख योगदान है, फलस्वरूप आज भी वो दलितों के मसीहा की प्रासंगिकता लिए हुए हैं। डॉ. अम्बेड़कर आधुनिक भारत के उन महान नेताओं में से एक हैं जिन्होंने चिन्तन और संघर्ष के द्वारा हमारे देश के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया। भारतीय समाज, जो अनन्तकाल से जाति, वर्ण विभाजन के कारण अनेक विभागों में विभक्त था, उसके सुधारीकरण का जो सराहनीय प्रयास अम्बेडकर जी ने किया वह भारतीय इतिहास का सुनहरा अध्याय है।

अम्बेडकर के अनुसार उनके ऊपर गौतमबुद्ध, कबीरदास और ज्योतिबा फुले का असीम प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। जहाँ एक तरफ कबीरदास जी ने उन्हें भक्ति का मार्ग दिखाया है वहीं दूसरी तरफ ज्योतिबा फुले से उन्हें अपने अधिकारों के लिये संघर्ष करने की प्रेरणा प्राप्त हुई है। गौतमबुद्ध के सर्वोत्तम आदर्शों ने उन्हें धर्म के सद्मार्ग से परिचित कराया है। उन्हीं के आदर्शों पर चलकर अम्बेडकर ने समाज की उन्नति के लिए सामूहिक धर्म परिवर्तन का काम किया था। वे इस तथ्य को भली–भाँति समझ चुके थे कि उन्हीं के आदर्शों पर चलकर दलित समाज के उद्धार का कार्य किया जा सकता है। अम्बेडकर इस बात से भलीभांति परिचित थे कि पश्चिम का लोकतंत्र, समानता, स्वाधीनता का सिद्धांत ही हमारे देश के अछूतों का उद्धार कर सकता है। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में दलित समाज के उत्थान का जो संग्राम किया था, उसके जो उपाय बताये थे, उसके लिये उनके मन पर छात्र जीवन में अमेरिकी अंग्रेजी समाज की अमिट छाप का विशेष योगदान था। उन्होंने वहाँ के लोकतंत्र तथा संवैधानिक तंत्र का गहन अध्ययन कर उसे भारतीय परिवेश में उतारने का भरसक प्रयास किया।

अम्बेडकर दलित समाज के सभी आयामों को मुख्य धारा में लाने का पुरजोर समर्थन करते हैं। वे होमरूल से पूर्व ही सामाजिक एकता स्थापित करने के पक्षधर थे। उनका कहना था कि होमरूल केवल बाह्मणों का ही जन्मसिद्ध अधिकार नहीं है बल्कि यह महारों का भी जन्मसिद्ध अधिकार है। उनके अनुसार स्वशासन हो जाने पर भी सवर्ण की गुलामी से यदि दलितों को मुक्ति नहीं मिली तो ऐसे स्वशासन का कोई अर्थ नहीं रह जायेगा। इसलिये उनका निरन्तर प्रयास था कि सवर्ण हिन्दू दलितों के प्रति अपनी मानसिकता में स्वाभाविक बदलाव लाये। अम्बेडकर दलितों की अचेतावस्था से काफी तंग थे। वे इनकी दुर्दशा के लिये जितना जिम्मेदार सवर्ण तत्वों को मानते थे वहीं उनकी मान्यता थी कि शूद्रों की मूर्छावस्था भी उनकी दुर्दशा के लिये उतनी ही जिम्मेदार है। अपने इसी मन्तव्य को साकार रूप देने के लिये उन्होंने पत्र–पत्रिकाओं तथा पुस्तकों की एक श्रृंखला प्रकाशित की। जिसमें दलितों की समस्याओं और उनके उत्पीड़न की खबरों का प्रकाशन होता था। अपने सम्पादकीय टिप्पणी में उन्होंने स्पष्ट किया था कि, "देश के सभी वर्तमान समाचार पत्र केवल कुछ कुलीन जातियों के हितों का संवर्द्धन कर रहे हैं। दलित वर्गों का उत्थान तब तक संभव नहीं है जब तक ये शिक्षित नहीं हो जाते तथा इनके हाथों में शक्ति नहीं आ जाती।"

यह सच है कि इस काल में अछूतों के उत्थान के लिये कई तरफ से आवाजें उठ रहीं थीं। परन्तु देखना यह था कि इन आवाजों में कौन सी ऐसी आवाज है जो दरिद्रों के उत्थान व उनके सामाजिक सुधार के लिये उठ रही हो। वे चाहते थे कि दलितों की समस्याओं पर अलग से विचार किया जाये। चूंकि अंबेडकर स्वयं अछूतों की पीड़ा से वाकिफ थे। अछूत का कटु अनुभव उन्हें बचपन से ही हुआ था। इसलिये वे अछूतों को दूसरों की दया पर नहीं छोड़ना चाहते थे। अम्बेडकर का स्वप्न था – "प्रत्येक व्यक्ति सम्मान से जी सके।" समाज से जाति पाँति का भेदभाव समाप्त हो। इसी के लिये वे दिन–रात मेहनत कर रहे थे। उनकी मान्यता थी कि, "महान व्यक्ति मौज करने के लिये नहीं अपितु महान कार्य करने के लिये पैदा होते हैं।'' अम्बेडकर को अछूतोद्धार के लिए अलग रास्ता चुनना पड़ा।

'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना उनके उत्कृष्ट विचार को उद्घाटित करते हैं। इस सभा के उद्देश्य निम्नवत हैं :

- अछूत वर्ग की पढ़ाई के लिये सुविधा मुहैया कराना।
- अछूत वर्ग के लोगों के लिये छात्रावास खोलना।
- औद्योगिक तथा कृषि से संबंधित स्कूल खोलकर अछूतों की आर्थिक स्थिति को सुधारना।
- दलित वर्ग के लोगों की स्थिति को सुधारने के लिये यथासंभव प्रयास करना।
- दलित वर्ग को जागरूक करने हेतू पुस्तकालय, सोशल सेंटर्स एवं स्टडी सर्किल खोलना।

अम्बेडकर का स्पष्ट कहना था कि अस्पृश्यता को खत्म करने के लिये न तो गाँधी जी ने कुछ किया और न ही काँग्रेस ने कुछ किया। हमें अपने भाग्य को स्वयं ही गढ़ना होगा। हमारा काम हमारे द्वारा ही होगा। हम सदियों तक गूंगे बने रहे पर अब नहीं बन सकते हैं। मन्दिर प्रवेश से दलित वर्ग की समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता है। इसीलिये अम्बेडकर ने दलितों का आह्वान करते हुये कहा – "हे भारत के गरीबों, दलितो! तुम्हारा उद्धार इस बात में है कि तुम अपने हितों की रक्षा करने वाले काम करो न कि इस बात में है कि तुम तीर्थयात्रा करते रहो या व्रत या पूजा में अपना समय गँवाते रहो। धर्म–ग्रंथों के समक्ष माथा टेकते रहने से या उनके अखण्ड पाठ करते रहने से तुम्हारे बन्धन, तुम्हारी आवश्यकताएँ तथा तुम्हारी निर्धनता कभी दूर नहीं हो सकती। बाबा साहेब ने चालीस साल तक राजनीति के उतार–चढ़ाव देखे। जब उन्होंने यह अनुभव किया कि अब स्वतन्त्रता मिलने वाली है तो उन्होंने वयस्क मताधिकार पर जोर दिया। अम्बेडकर जी की समस्त विचारधारा ही धार्मिक सुधार और सामाजिक सुधारों का संगठन थीं। उनका मानना था कि भौतिक व आध्यात्मिक विकास के बीच संतुलन अत्यंत आवश्यक है।

अम्बेडकर का दृष्टिकोण दलितों तक ही सीमित नहीं था, अपितु उन्होंने नारी जगत के सुधार हेतु अवश्यम्भावी कदम उठाए। नारी जाति के शोषण एवं अत्याचार

को देखकर डॉ० अम्बेडकर ने 'हिंदू कोड बिल' विधेयक के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का जो शंखनाद किया, उससे ही नारी– समाज को सोचने, समझने और अपनी स्थिति का मूल्यांकन करने की जो भावना उत्पन्न हुई उसी के फलस्वरूप वर्तमान युग में नारी समाज में क्रांतिकारी रूप में राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना ने उन्हें सदियों पुरानी गुलामी की बेड़ियां काटकर स्वतंत्रता की राह दिखाई, जिसका श्रेय निश्चित रूप से डॉ. अम्बेडकर को जाता है। वास्तव में आज वर्तमान में महिलाएं जिस स्वतंत्रता व समानता का उपभोग कर रही हैं तथा उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर जो अधिकार मिले हुए हैं, उन्हें इस स्थिति में पहुंचाने की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में थे डॉ० अम्बेडकर । अम्बेडकर ने उस समय नारी प्रगति की आवाज को बुलंदी से उठाया जब नारी सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से सबसे ज्यादा उपेक्षा का शिकार थी और उनके प्रयासों के परिणामस्वरुप ही महिलाओं को दासता की बेड़ियों से मुक्ति मिली तथा उन्हें स्वच्छंद वातावरण में मानववादी दृष्टिकोण के साथ समाज में अपनी अस्मिता एवं वजूद को स्थापित करने का अवसर मिला।

अंबेडकर का धर्म दर्शन

दलित चेतना के अग्रदूत बाबा साहेब अंबेडकर के क्रांतिमूलक विचारों से संपूर्ण विश्व परिचित है। महापुरुषों की श्रेणी में वे प्रथम पंक्ति में आते हैं। वर्ण व्यवस्था के दुष्चक्र में फँसे भारतीय समाज को बाबा साहेब ने जो राह दिखाई उस मायने में वे एक सचमुच युगदृष्टा थे। उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य, अछूतों को शर्मनाक जीवन से छुटकारा दिलाना बना लिया था। बाबा साहेब ऐसे धर्म को अपनाना चाहते थे जिसके मूल में मनुष्यता एवं नैतिकता का समावेशन हो। जिसके केंद्र में स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व के विचार हो। डॉ० अंबेडकर के अनुसार, सच्चा धर्म वह है जो विज्ञान अथवा बौद्धिक तत्व पर आधारित हो, न कि धर्म का केंद्र ईश्वर, आत्मा की मुक्ति और मोक्ष हो। धर्म का कार्य सामाजिक कल्याण तथा विश्व का पुनः निर्माण हो न कि उसकी उत्पत्ति और अंत की व्याख्या करना। समाज के अनिवार्य तत्व के रूप में धर्म को स्वीकृति देते हुए वे कहते हैं कि सच्चे धर्म को मानवता व नैतिकता के विकास पर बल देना चाहिए ताकि समाज में एकता

कायम हो सके। आगे वह कहते हैं कि धर्म प्रत्येक समाज के लिए नैतिकता का निर्धारक तत्व होता है, इसलिए धर्म एक ऐसी आवश्यकता है जो मानव को सही अर्थों में मानव बनाने के लिए अनिवार्य है। मूलतः बाबा साहेब धर्म के पक्षपाती थे लेकिन उनका धर्म विश्वास, पाखंड, अंधविश्वास और मानव में आपसी भेदभाव से ऊपर था। वह हिंदू धर्म की जन्मना जाति प्रथा से उत्पन्न तिरस्कारों से विचलित थे। यही कारण था कि वे पद दलित व शोषित जाति को समाज में सम्मान दिलाने के पक्षधर थे। इसीलिए वे मानवीय गतिविधियों की तीव्रता में सहयोगी होने वाले नैतिक आचरण को ही 'धर्म' की संज्ञा देते थे।

स्पष्ट है कि अंबेडकर के विचार में धर्म कोई गहरी धार्मिक आस्था नहीं है और न ही किसी अदृश्य अज्ञात का समस्यात्मक संकेत। यह एक मानवोचित आस्था है जो हमारी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। धर्म संबंधी यही विचार बाबा साहेब को हिंदू धर्म से दूर और बौद्ध धर्म के निकट ले गए। अनेक धर्मों के गहन अध्ययन व चिंतन के उपरांत उन्होंने स्वयं को बौद्ध धर्म के प्रति समर्पित करने का निश्चय लिया। बाबा साहेब के विचार में जिस प्रकार एक बीज में अनंत संभावनाएं अंतर्निहित होती हैं, उसी प्रकार एक बौद्ध धर्म में समाज को पथ प्रदर्शित करने की सभी क्षमताएं विद्यमान हैं। अंबेडकर बौद्ध धर्म से बेहद प्रभावित थे क्योंकि उसमें तीन सिद्धांतों का समन्वित रूप मिलता है जो किसी अन्य धर्म में नहीं मिलता

- बौद्ध धर्म विश्वास नहीं तर्क और अनुभव पर आधारित है।
- सुधार, संशोधन और विकास की संभावना है।
- लोकतंत्रात्मक संविधान।

बौद्ध धर्म के 'कर्म सिद्धांत' को उन्होंने तर्क की कसौटी पर उचित पाया। चाहे वह बौद्ध धर्म की महासम्मत की अवधारणा हो या फिर प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत, सभी में तर्क एवं अनुभव की अमिट छाप परिलक्षित होती है। अंबेडकर की दृष्टि में बौद्ध धर्म एक तार्किक–सामाजिक प्रक्रिया का परिणाम था जिसने समता पर आधारित सामाजिक पृष्ठ निर्मित किया। बौद्ध धर्म का क्रमिक विकास जो हीनयान– महायान –वज्रयान के प्रक्रम से होते हुए शून्यवाद (माध्यमिका–नागार्जुन)

तक आ पहुंचा वह धर्म में अंतर्निहित सुधार, संशोधन और विकास की परिपक्व अवस्था को प्रदर्शित करता है। अंबेडकर जी के विचार में बौद्ध धर्म विकासवाद एवं संभववाद की कसौटी पर समुचित वातावरण प्रदान करता है। जिससे बौद्ध धर्म सापेक्षिक रूप से अधिक सुधारवादी धर्म के रूप में परिलक्षित होता है। यह प्रत्येक क्षेत्र स्थिति व घटनाओं के संदर्भ में पर्याप्त नम्यता को प्रदर्शित करता है।

अपने प्रसिद्ध लेख 'बुद्ध' अथवा 'कार्ल मार्क्स' में डॉ० अंबेडकर कहते हैं कि भिक्षु संघ का संविधान लोकतंत्रात्मक संविधान था। बुद्ध केवल इन भिक्षुओं में से एक भिक्षु थे। अधिक से अधिक वह मंत्रिमंडल के सदस्यों के बीच एक प्रधानमंत्री के समान थे। वह तानाशाह कभी नहीं थे। उनकी मृत्यु से पहले उनसे दो बार कहा गया कि वह संघ पर अपना नियंत्रण रखने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त कर दें लेकिन हर बार उन्होंने यह कहकर इंकार कर दिया कि 'धम्म' संघ का सर्वोच्च सेनापति है। उन्होंने तानाशाह बनने और नियुक्त करने से इंकार कर दिया। उक्त सभी विलक्षणतायें एकमात्र बौद्ध धर्म में परिलक्षित हुई जिसका उन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। डॉ० अंबेडकर ने बौद्ध धर्म की केवल एकपक्षीय तस्वीर को ही प्रस्तुत नहीं किया बल्कि तस्वीर के दूसरे पक्ष से भी अवगत कराया है। उन्होंने अपनी पुस्तक "बुद्ध एंड हिज धम्म" में बौद्ध परंपरा में प्रचलित कुछ आख्यानों पर कई मौलिक प्रश्न उठाए हैं जिनका बहुत ही तार्किक उत्तर स्वयं अंबेडकर जी ने दिया है। सर्वप्रथम, अंबेडकर जी ने गौतम बुद्ध के जीवन से संबंधित पहलुओं पर प्रकाश डाला। गौतम बुद्ध ने प्रवज्या क्यों ली? परंपरागत कथनों जैसे– बुद्ध ने एक वृद्ध पुरुष देखा, फिर एक रोगी व्यक्ति को देखा, फिर एक मृत पुरुष को देखा, फिर एक प्रसन्नचित्त सन्यासी को देखा, इसलिए वह घर छोड़ कर चले गए।

परंतु अंबेडकर जी ने इन परंपरागत दृश्यों को स्वीकार नहीं किया बल्कि उन सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों को उत्तरदायी बताया जो कि तत्कालीन समाज को प्रभावित कर रही थी। अंबेडकर जी का कहना था कि सिद्धार्थ गुपचुप तरीके से घर छोड़कर नहीं गए बल्कि उन्होंने अपने परिवार की आज्ञा ली, तत्पश्चात गृह त्याग किया। गृह त्याग की घटना को बाबा साहेब ने बड़े ही रोचक एवं ऐतिहासिक रूप से प्रस्तुत किया है। बाबा साहेब के अनुसार दूसरा मौलिक

प्रश्न चार आर्य सत्य में व्याप्त विरोधाभासों को लेकर है। इस सिद्धांत के अनुसार प्रथम आर्य सत्य है दुःख अर्थात संपूर्ण संसार दुःखमय है और इस दुःख को ही बौद्ध धर्म की मूल मान्यता के रूप में स्वीकार किया है। परंतु यह कथन बौद्ध धर्म की विचारधारा के बिल्कुल विपरीत है। जब जीवन दुःख से ही भरा हुआ है, तो मनुष्य के जीते जी सुख व मोक्ष की प्राप्ति कैसे संभव है? इससे तो धर्म का मूल उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है। इन सभी भ्रांतियों का उत्तर भीमराव जी ने अपने ग्रंथ में दिया है। अंबेडकर जी ने कहा है कि, "बुद्ध ने जीवन में दुःख की व्यापकता को स्वीकार कर उसका अंत करने का रास्ता दिखलाया है। जीवन स्वभावतः दुःख है, ऐसा नहीं है, बल्कि जीवन में दुःख है, ऐसा समझना चाहिए।"

बाबा साहेब ने तीसरे सवाल के संदर्भ में बौद्ध धर्म के आत्मा, कर्म तथा पुनर्जन्म के सिद्धांत को लेकर प्रचलित भ्रांतियों का समाधान किया है। बुद्ध ने 'आत्मा' की प्रचलित धारणा का खंडन किया है। परंतु बुद्ध 'कर्म और पुनर्जन्म' के सिद्धांत को स्वीकार करते हैं। अब सवाल यह उठता है कि जब आत्मा ही नहीं तो फिर पुनर्जन्म किसका? जब आत्मा ही नहीं तो कर्म किसका? यह प्रश्न बड़े ही पेचीदे हैं परंतु बाबा साहेब ने इन सभी सवालों का जवाब बड़े ही तर्कपूर्ण ढंग से दिया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार हिंदू धर्म में, मौजूद आत्मा, कर्म तथा आवागमन के विचारों को बौद्ध धर्म में उलझा दिया गया। बौद्ध धर्म के इन विचारों को बाबा साहेब ने हिंदू धर्म से संबंधित विचारों से स्पष्ट किया ताकि लंबे समय से चली आ रही भ्रांतियां दूर हो सकें।

बाबा साहेब के समक्ष चौथा सवाल भिक्षु संघ से संबंधित था, गौतम बुद्ध ने भिक्षु संघ की स्थापना क्यों की? भिक्षु संघ बनाने के पीछे क्या उनका उद्देश्य भिक्षु संघ को समाज से पृथक रखना था? या भिक्षुओं के रूप में वे आदर्श समाज स्थापित करना चाहते थे। भिक्षुओं का कर्तव्य था कि वह जगह–जगह जाकर आदर्श स्थिति स्थापित करें और लोगों को शांति व परस्पर सौहार्द्र के साथ रहना सिखाएं।

उपरोक्त विषयों के अंतर्गत भीमराव अंबेडकर जी ने धर्म क्या है? और अधर्म क्या है? सदधर्म क्या है? नैतिकता, कर्म, पुनर्जन्म, आत्मा, अहिंसा आदि धारणाओं का स्पष्ट विश्लेषण प्रस्तुत किया है। आधुनिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अंबेडकर जी ने मूल बौद्ध धर्म के विचारों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया है। अंबेडकर जी ने गौतम बुद्ध के सिद्धांतों का विश्लेषण बड़े ही विद्वतापूर्ण ढंग से अपने ग्रंथ में किया है। यही कारण था कि अंबेडकर के साथ एक बड़ा समूह बौद्ध धर्म में दीक्षित हुआ।

अंबेडकर का त्रयी सिद्धांत

यदि कहा जाए कि डॉ० अंबेडकर जी ने अपने त्रयी सिद्धांत के माध्यम से बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार को गति प्रदान की तो यह अतिशयोक्ति न होगी। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में एक ऐसे समाज की स्थापना करने का प्रयास किया जिसका मूलाधार ही त्रयी सिद्धांत है। यह त्रयी सिद्धांत है – स्वतंत्रता, समता एवं भ्रातत्व

– शिक्षा, संगठन एवं संघर्ष

– बुद्ध, धम्म तथा संघ।

यह तीन त्रयी सिद्धांत ही समग्र दृष्टि से 9 मूल तत्व हैं। विश्व में किसी भी सामाजिक क्रांति के लिए विचारों की स्पष्टता होना बहुत जरूरी है क्योंकि विचारों की स्पष्टता से ही परिवर्तन का कदम उठाया जा सकता है। ये सिद्धांत नैतिकपूर्ण मानव जीवन व कल्याणकारी समाज की स्थापना हेतु अवश्यंभावी हैं।

अंबेडकर का राष्ट्रवाद :

डॉ. अंबेडकर के विचार अनेक आयामों को समावेशित किये हुए हैं। वे राष्ट्रवादिता के प्रबल परिचायक थे। उन्होंने अपने जीवन काल में राष्ट्र के समक्ष आने वाली चुनौतियों को पहले ही भांप लिया था। इसी कारणवश बाबा साहेब 'एक राष्ट्र, एक भाषा' के समर्थक थे। उनका मानना था कि राज्यों को पृथक–पृथक राजभाषा चुनने का अधिकार देना एक सशक्त राष्ट्र के लिए हानिकारक है, इससे देश के भीतर भाषाई गुटवादिता बढ़ेगी जो आपसी संघर्ष को जन्म देगा। स्वयं

मराठी होने के बावजूद उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया था। अंबेडकर भारतीय समाज के उन बौद्धिक नेताओं में से एक थे जो स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान ही समझ चुके थे कि एक मजबूत राष्ट्र के निर्माण के लिए जातिवाद, सत्तावाद, सांप्रदायिकता से मुक्ति जरूरी है।

अम्बेडकर सामाजिक–आर्थिक विषमता के उस विषाक्त स्वरूप से अच्छे से अवगत थे जिसने भारतीय समाज को कुछ इस तरह से जकड़ रखा था कि अगर भारत राजनीतिक रूप से स्वतंत्र भी हो जाता तो भी जातिवाद, सत्तावाद, सांप्रदायिकता का दीमक उसे दूसरे विभाजन की ओर धकेल देता। असल में अंबेडकर का राष्ट्रवाद भौगोलिक सीमाओं से अधिक समानता पर आधारित था। वह वर्तमान की उपलब्धियों पर ध्यान देने के बजाय भविष्य की आशंकाओं को दूर करने के लिए परिश्रम करने वाले नेता थे। उन्होंने भारतीय समाज में गहरे तौर पर फैले भारी असंतोष को अच्छी तरह से समझ लिया था। यही कारण है कि उन्होंने राष्ट्र को बनाए रखने के लिए असंतोष को खत्म करने के लिए आवाज बुलंद की। अंबेडकर कहते हैं, मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि जब कोई यह कहे कि मैं पहले भारतीय हूं, बाद में हिंदू या मुस्लिम। मुझे यह स्वीकार नहीं है कि धर्म, संस्कृति,

भाषा तथा राज्य की निष्ठा से ऊपर है भारतीय होने की निष्ठा। मैं यह चाहता हूं कि लोग पहले भारतीय हों और अंत तक भारतीय ही रहे, भारतीय के अलावा और कुछ भी नहीं।

बाबा साहेब के विचारों का प्रभाव हमें संविधान में भी स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है, चाहे वह असमानता, अस्पृश्यता के अभिशाप से मुक्ति की बात हो या दलित उत्थान के लिए अनुबंध, बंधुत्व हो या राज्य के नीति निर्देशक तत्व, सभी को बाबा साहेब ने संविधान में स्थान दिया है। संवैधानिक उपचारों का अधिकार, जो व्यक्ति को अपने अधिकारों के खिलाफ न्यायालय जाने का अधिकार देता है, को बाबा साहेब ने संविधान की आत्मा की संज्ञा दी क्योंकि यह देश में व्यक्ति के मौलिक अधिकारों की सुरक्षा की गारंटी है। यही कारण है कि बाबा साहेब को आधुनिक भारत का शिल्पकार कहा गया।

बाबा साहेब देश का नेतृत्व सुरक्षित हाथों में चाहते थे इसीलिए उन्होंने देश का प्रतिनिधि चुनने का अधिकार आम जनता को दिया और साथ में एक चेतावनी भी दी कि "मैं महसूस करता हूं कि संविधान चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, यदि वे लोग, जिन्हें संविधान को अमल में लाने का काम सौंपा जाये, खराब निकले तो निश्चित रूप से संविधान खराब सिद्ध होगा। दूसरी ओर, संविधान चाहे कितना भी खराब क्यों न हो, यदि वे लोग, जिन्हें संविधान को अमल में लाने का काम सौंपा जाये, अच्छे हों तो संविधान अच्छा सिद्ध होगा" दरअसल यह भारतीय लोगो के लिए बाबा साहेब का एक संदेश ही था कि वह अपने मताधिकार का प्रयोग एक बेहतर नेता चुनने के लिए ही करें।

अतएव,

उक्त विषयवस्तु पर गहन शोध व पर्याप्त विचार–विमर्श के उपरान्त ये स्पष्ट हो जाता है कि बाबा साहेब की दृष्टि केवल दलित उत्थान तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उनके दर्शन में हम राष्ट्र–निर्माण की एक मजबूत संकल्पना के साथ–साथ सामाजिक–आर्थिक समता व धर्म, संस्कृति के परिशोधन संबंधी विचारों की एक पूरी

श्रृंखला पाते हैं। उन्होंने एक आदर्श धर्म व व्यावहारिक समाज की विलक्षणताओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। यद्यपि उन्होंने आधुनिक शिक्षा व मूल्यों को पश्चिम से प्राप्त किया हो लेकिन उन्होंने उसका अंधाधुनीकरण नहीं किया बल्कि भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप समालोचनपूर्ण दृष्टिकोण को अंगीकृत किया। उनके लिए स्वतंत्रता का अर्थ केवल राजनीतिक नहीं था अपितु उसमें सामाजिक व आर्थिक सन्दर्भ भी निहित था। उन्होंने सामाजिक समता के माध्यम से जो शोषित–वंचितों के लिए स्वर उत्पन्न किये उसकी गूंज आज भी समाज सुधार के रूप में हमें सुनाई देती हैं। प्रत्येक वर्ष 14 अप्रैल (अंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में) को हम अवश्य ही "समानता दिवस" के रूप में मनाते हैं लेकिन सही अर्थों में जब तक समाज में व्यावहारिक समानता स्थापित नहीं होगी तब तक हम बाबा साहेब के जीवन दर्शन को समझने में कहीं न कहीं चूक करते रहेंगे। अतः आवश्यकता हैं कि हम उनके सम्यक जीवन दर्शन के उक्त पहलुओं को आत्मसात करें व राष्ट्र निर्माण में अपनी प्रभावी भूमिका सुनिश्चित करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बुद्ध और उनके धर्म का भविष्य
2. बुद्ध और उनका धम्म
3. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वांग्मय खंड– 36
4. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वांग्मय खंड– 40
5. सिंह, मोहन – डॉ० भीमराव अम्बेडकर, व्यक्तित्व के कुछ पहलू
6. चिरंजीलाल, डॉ० अम्बेडकर और बुद्ध उपदेश
7. जिज्ञासु, चन्द्रिका प्रसाद, बाबा साहेब का जीवन संघर्ष